आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 10 जून-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

किसानों और पशुपालकों के हित में दशाब्दी के वर्ष पर्यन्त समारोह शुरू

प्रिय, पशुपालक एवं किसान भाइयों और बहनो !

राम–राम सा।

राज्य का एक मात्र पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर 18 मई 2019 को अपनी स्थापना के दसवें वर्ष में प्रवेश कर गया है। हमारे लिए स्थापना का ''दशाब्दी वर्ष'' एक ऐतिहासिक अवसर है। यह विश्वविद्यालय अपने 9 वर्ष के शानदार सफर पर चिंतन करके पूरे उत्साह और उमंग से युक्तियुक्त तरीके से उत्कृष्टता के पैमाने पर नई सोच और कार्यक्रमों के साथ आगे बढ़ेगा, ऐसी मुझे आशा है। 10 करोड़ रू. राशि से प्रारंभ होकर आज तकरीबन 100 करोड़ रूपए बजट में अर्थात दस गुना अभिवृद्धि से एक सुदृढ़ वित्तीय आधार बना है। बीकानेर के अलावा नवानियां (उदयपुर) और जयपुर में नए पशुविज्ञान महाविद्यालयों की स्थापना से प्रदेश में पशुचिकित्सा शिक्षा में नए आयाम जुड़े हैं। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में राज्य के विभिन्न जिलों में 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश के संवर्द्धन और संरक्षण तथा हैरिटेज जीन बैंक की संकल्पना लागू किए जाने से राज्य के पशुपालकों को लाभ पहुंचा है। राज्य की गांव–ढ़ाणी तक पशुचिकित्सा शिक्षा और पशुपालन सेवाओं का विस्तार करने के लिए 15 जिलों में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुंसधान केन्द्रों की स्थापना की गई है जो कि देश में एक अलग किस्म का मॉडल है। पशु विज्ञान और पशुपालन सेवाओं में आधुनिकतम तकनीक और अनुसंधान के लिए 10 उन्नत केन्द्रों की स्थापना की पहल राजुवास द्वारा की गई है। विश्व में पशु विज्ञान के क्षेत्र में अंतरिक्ष आधारित तकनीक और अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी केन्द्रों की स्थापना करने वाला पहला विश्वविद्यालय बना है। विश्वविद्यालय के सभी संस्थानों द्वारा ''दशाब्दी वर्ष (2019–20)'' को समारोह पूर्वक मनाने के लिए नया ''लोगो'' जारी कर किसानों, पशुपालकों, आमजनों और विद्यार्थियों के हित में वर्ष पर्यन्त चलने वाले कार्यक्रमों का आगाज हो चुका है। राज्य के तीनों महाविद्यालयों में पशु चिकित्सा शिक्षा जागरूकता अभियान भी शुरू किया गया है। आमजन को पशुचिकित्सा शिक्षा के लिए प्रेरित करने के लिए पेम्पलेट जारी करके और नवोदित पशुचिकित्सकों के लिए ई–बुलेटिन प्रारंभ किया गया है। जागरूकता अभियान के साथ–साथ जैविक पशुपालक संवेदीकरण, देशी गोवंश प्रदर्शन और पशुरोग निदान सेवाओं के माध्यम से किसानों और पशुपालकों को लाभान्वित किया जाएगा। सभी संकायों में कौशल विकास और शैक्षणिक संसाधनों का सुदृढ़ीकरण करके गुणवत्तायुक्त शिक्षण और अनुसंधान कार्यों को प्राथमिकता से लागू किया जाएगा। हमारा प्रयास होगा कि पशुचिकित्सा स्नातक छात्र–छात्राएं एक 'एम्बैसेडर'' की भूमिका के लिए तैयार किये जाए। दसवें स्थापना दिवस के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार और केन्द्रीय गौवंश अनुसंधान संस्थान मथुरा के साथ राजुवास द्वारा किये गए आपसी करार (एम.ओ.यू.) से राज्य में गौवंश और भैंस पालन को नई दिशा मिलेगी। मैं, आपसे आग्रह करता हूं कि दशाब्दी वर्ष के दौरान चलाए जा रहे पशुपालन हितकारी कार्यक्रमों का पूरा लाभ उठाएं।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार के निदेशक डॉ. एस.एस. दहिया के साथ आपसी करार करते हुए

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा केन्द्रीय गौवंश अनुसंधान संस्थान, मथुरा के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल के साथ आपसी करार करते हुए

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में दशाब्दी वर्ष समारोह का आयोजन

जैविक पशुपालन, देशी गौवंश और पशु रोग निदान सेवाओं से पशुपालकों को मिलेगा लाभ : कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 18 मई 2019 को अपने दसवें स्थापना दिवस को धूम–धाम से मनाया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा और अतिथियों ने वर्ष पर्यन्त चलने वाले दशाब्दी समारोह के 'लोगो' और नवोदित पशुचिकित्सकों के लिए ई–बुलेटिन का विमोचन किया। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के दशाब्दी वर्ष में नए संकल्प योजनाओं और कार्य संस्कृति के साथ आगे बढ़ेगा। विश्वविद्यालय अपनी उत्कृष्ट पशुचिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा सेवाओं और अनुसंधान तकनीकों की बदौलत दक्षिण–पूर्वी एशिया में पशुचिकित्सकों के प्रशिक्षण का भी केन्द्र बन गया है। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गत 9 वर्षों में कायम की गई उत्कृष्टता की रफ्तार को आगे बढ़ाने की हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि देश में राजुवास की एक ब्रान्ड रूप में पहचान बनी है। समारोह के विशिष्ट अतिथि महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. भागीरथसिंह बिजारणियां ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पशुचिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने पशुचिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में विश्व में नए कीर्तिमान स्थापित कर देश में नाम रोशन किया है। दशाब्दी वर्ष को चुनौति के रूप में संकल्प के साथ आगे ले जाने की जरूरत है। बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एच.डी. चारण ने कहा कि आने वाला दशक पशुपालन और कृषि का है। तकनीकी विश्वविद्यालय राजुवास के साथ मिलकर कार्य करने का इच्छुक है। विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय गौवंश अनुसंधान संस्थान, मेरठ के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने बताया कि संस्थान में भ्रूण प्रत्यारोपण, इन विट्रो फर्टिलाइजेशन और देशी गोवंश की 43 विभिन्न प्रजातियों के अनुसंधान का लाभ एम.ओ.यू. होने से राजुवास को लाभ मिलेगा। केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार के निदेशक ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और फैकल्टी के लिए संस्थान में उन्नत तकनीकी और अनुसंधान सेवाएं सुलभ हैं। कुलपति प्रो. शर्मा और अतिथियों ने पशुचिकित्सा शिक्षा और साथ के प्रति युवाओं को आकर्षित करने के लिए राजुवास जनसम्पर्क प्रकोष्ठ द्वारा तैयार "पशुचिकित्सक कैसे बनें और पशुचिकित्सा शिक्षा के आयाम" नामक पैम्फलैट का विमोचन किया। अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर डीन–डायरेक्टर फैकल्टी सदस्य, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे। तीनों संगठक महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने इस अवसर पर रंगारंग प्रस्तुतियां दी।

- स्थापना दिवस के अवसर पर प्रातः 9 बजे राजुवास क्लिनिक्स परिसर में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने स्वंय टीकाकरण करके एक दिवसीय निःशुल्क एंटी रैबीज टीकाकरण शिविर का शुभारंभ किया। महावीर इन्टरनेशनल बीकानेर शाखा की सहभागिता से आयोजित शिविर में वेटरनरी कॉलेज क्लिनिक्स के चिकित्सा विशेषज्ञों की सेवाएं उपलब्ध करवाई गई। शिविर में 48 श्वान मालिकों ने लाभ उठाया।

- स्थापना दिवस पर बीछवाल सें एक दिवसीय पशु बांझपन निवारण चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। वेटनरी कॉलेज के पशु मादा एवं प्रसूति रोग विभाग के विशेषज्ञों ने 67 पशुओं का उपचार कर राहत प्रदान की।

- स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान जयपुर में पशु कल्याण जागरूकता अभियान के तहत गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 50 पशुपालकों ने भाग लिया। पशुओं में रोग उन्मूलन व टीकाकरण के तहत 35 पशुओं का स्वास्थ्य परीक्षण एवं उपचार कर टीकाकरण किया गया।
- पशु चिकित्सा एवं विज्ञान महाविद्यालय नवानियां (उदयपुर) द्वारा टीकाकरण व रोग उन्मूलन अभियान में नेतावाला गांव में गौवंश व भैंसों में विभिन्न रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण करके गोष्ठी का आयोजन किया गया जिससे 130 पशुपालक परिवार लाभान्वित हुए।

शिविर में 219 पशुओं का टीकाकरण किया गया जिसमें 159 भैंस व 60 गौवंश शामिल थे। 17 पशुओं का विभिन्न रोगों का उपचार और 36 पशुओं का बाहरी परजीवी नियंत्रण व पशुओं के पेट कृमि का उपचार किया गया।

- जिलों में स्थित 13 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों और कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर द्वारा 18 मई को राज्य के 14 जिलों में वैज्ञानिक एवं नवीन तकनीकों की जानकारी देने के लिए उन्नत पशुपालक गोष्ठियों का आयोजन किया गया जिनमें 451 पशुपालक किसान लाभान्वित हुए। इन केन्द्रों की प्रयोगशालाओं में पशुचिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा पशुरोग निदान सेवाओं के तहत 95 बीमार पशुओं के दूध, रक्त, मूत्र और गोबर की जांच कर उचित परामर्श दिया गया। बोजून्दा (चितोड़गढ़) केन्द्र द्वारा आयोजित गोस्ठी में 62 पशुपालकों ने भाग लिया और 18 पशुओं की रोग निदान जांच की गई। सूरतगढ़ केन्द्र में 50 पशुपालकों की गोष्ठी करके 11 रोग निदान जांचे की गई। कुम्हेर (भरतपुर) और बाकलियां (नागौर) केन्द्र द्वारा 8–8 रोग निदान जांच का कार्य किया गया। जोधपुर केन्द्र में 23 पशुपालकों की गोष्ठी और 9 नमूनों की जांच की गई।
- राज्य के 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर देशी गौवंश का प्रदर्शन करके उनके संरक्षण उपायों की जानकारी दी गई। पशु चिकित्सा के विशेषज्ञों की वार्ताओं द्वारा किसान और पशुपालकों को जैविक पशुपालन के विभिन्न पक्षों के बारे में बताकर उसके महत्व को समझाया। बीकानेर में 28, बीछवाल में 70, कोड़मदेसर 40, नोहर (हनुमानगढ़) 20, चांदण (जैसलमेर) 50, वल्लभनगर (उदयपुर) में 130, बोजुन्दा (चितौड़गढ़) में 62 और डग (झालावाड़) में 54 किसान और पशुपालक इन गोष्ठियों से लाभान्वित हुए।

बांगलादेश के पशुचिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण संपन्न

भारत में पशुओं की औषधीय और शल्य चिकित्सा सेवाओं और उपचार विषयों पर बांगलादेश के 15 पशुचिकित्सा अधिकारियों का प्रशिक्षण 18 मई को सम्पन्न हो गया। भारत सरकार द्वारा राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर को दक्षिण एशिया पशुधन विकास परियोजना के तहत अर्न्तराष्ट्रीय प्रशिक्षण के लिए चुना गया है। 9 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा पशुचिकित्सा सेवाओं में जागरूकता, प्रशिक्षण और कौशल विकास जरूरी है। उन्होंने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय में आंखों, दांतों की शल्य क्रिया, सिटी स्केन, भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक के साथ–साथ पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और अन्य पशुचिकित्सा तकनीकों के 10 अनुसंधान केन्द्रों पर उन्नत अनुसंधान किया जा रहा है। कुलपति प्रो. शर्मा ने वेटरनरी विश्वविद्यालय की 9 वर्ष की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण कर "ट्रेनिंग मैन्यूल" का विमोचन किया। बांगलादेश प्रतिनिधि मंडल के प्रमुख डॉ. के.एम. बजलुर रहमान ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता और उन्नत पशुचिकित्सा तकनीकी में अग्रता से हमारे देश के पशुचिकित्सा अधिकारियों को इस प्रशिक्षण से लाभ मिल सकेगा।

शिक्षण पद्धतियों पर 35 सहायक प्रध्यापकों का ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के 35 नवागंतुक सहायक प्राध्यापकों का शिक्षण पद्धतियों पर द्वितीय 21 दिवसीय ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम 30 मई 19 को सम्पन्न हो गया। उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि 21 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम एक ऐसा अवसर है जिसमें प्रशासनिक, वित्तीय, प्रबंधन की कुशलता बढा कर प्रभावी शिक्षण पद्धतियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलेगी। उन्होंने सहायक प्राध्यापकों का आह्वान किया कि वे अनुभवी फैकल्टी से अपनी शंकाओं का समाधान कर अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हैं। कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि ऑरियेन्टेशन प्रशिक्षण कार्यक्रम को इस प्रकार डिजाइन किया गया है जिससे शिक्षकों को सम–सामयिक ज्ञान–विज्ञान को उन्नत करके प्रभावी शिक्षण कार्य में मदद मिल सके। प्रशिक्षण में वेटरनरी विश्वविद्यालय के तीनों महाविद्यालयों के फैकल्टी सदस्य और अन्य संस्थानों के सहायक प्राध्यापक भाग लिया जिन्हें वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. राकेश राव ने प्रमाण पत्र प्रदान किये। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के कोरिडिनेटर प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि 21 दिवसीय प्रशिक्षण में शिक्षण पद्धतियों के साथ–साथ शैक्षणिक कुशलता, प्रशासनिक और वित्तीय प्रबंधन पर 50 से भी अधिक विशेषज्ञों की वार्ताएं रखी गई। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर और फैकल्टी सदस्य मौजूद थे।

प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 3, 4, 8, 10, 15, 16, 22 एवं 24 मई को गांव बालरासर, रतननगर, ऊंटवालिया, खींवासर, झारिया, मेलूसर, खसोली एवं काकलासर गांवों मेंएक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 महिला पशुपालकों सहित कुल 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र में प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 4, 8, 15, 22 एवं 24 मई को गांव फुसेवाला, श्रीगंगानगर, अमरपुरा, 2केएसआर एवं 10 बीएनडब्ल्यू गांवो में तथा दिनांक 20 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 211 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4, 8, 9, 10, 14, 15, 16, 21, 22 एवं 23 मई को गांव सियावा, सगालिया, लूणोल, पंचदेवल, महीखेड़ा, ढाकेला, आल्पा, निम्बोडा, भैरूगढ एवं वाडेली गांवो में तथा 25 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 285 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 9, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 20 एवं 22 एवं को गांव आजवा, बिठुड़ा, पाटन, धोलिया, रींगण, सारड़ी, कलवानी, जेसलाण, इन्द्रपुरा एवं शिमला गांवों में तथा दिनांक 8 एवं 21 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 306 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 262 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 9, 10, 13, 15, 16, 20, 22, 24 एवं 25 मई को गांव नहारगढ़, बडलिया, नरबदखेडा, बेंवजा, गेगल, गोयला, गगवाना, रामसर एवं भगवानपुरा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 262 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 4, 8, 10, 13, 15, 17, 20, 22 एवं 25 मई को गांव कोया कुआं, तीजवड़, इन्द्रूवा फलां, आम्बा फलां, सालेडा, भीलवटा, घोडा कड़, अगनिया फलां एवं महोदव फलां गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 297 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 9, 10, 11, 14,15, 16, 20, 21, 22 एवं 23 मई को गांव झुल्का, श्यौराना, कमालपुरा, बागरैन, हिसामडा, मूडिया सांद, ऐंचैरा, खंसवाड़ा, रायसीस, खान खेड़ा गांवो में तथा दिनांक 18 एवं 25 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 25 महिला पशुपालकों सहित कुल 201 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 11, 14, 15, 16, 17, 21, 22, 23 एवं 24 मई को गांव मूण्डिया, भांवती, बिचारस, चूली, अरयिा केदार, भगवानपुरा, देवली भांची, बस्सी, खिडगी एवं धोली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शि विरों में 223 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 10, 11, 13, 22, 24 एवं 25 मई को गांव रायसर, पन्पालसर, गारबदेसर, कालू, उतमदेसर एवं सुडसर गांवों में तथा दिनांक 20 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 176 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 8, 9, 11, 13, 15, 21, 22, 24 एवं 25 मई को गांव खण्डगांव, झोटोली, लाड़पुरा खेत, गंगाईचा, ढाणी, हींगी, जनकपुर, हरिपुरा मांजी, पांचरा की झोपड़िया तथा हरिपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 279 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा 293 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3, 6, 8, 9, 10, 11, 16, 20, 25 एवं 27 मई को गांव चरलिया गडिया, फाचर अहीरान, रेल का अमराना, लड़ेर, हापावास, हसमतगंज, ऐराल, रामा खेड़ा, गंगा का खेड़ा एवं गाडिया वास गांवों में तथा दिनांक 14 एवं 21 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 293 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 11, 14, 15, 16, 17, 20, 21, 22 एवं 25 मई को गांव अलहपुरा, किलोल का पुरा, बिरोधा, बिश्रोदा, खरगपुरा, ओदी का पुरा, राजपुर, रावतपुरा, दलेलपुर एवं गुना का पुरा गांवों में तथा दिनांक 9 एवं 23 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 293 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 4, 8, 15, 16, 17,20, 21, 22, 23 एवं 24 मई को गांव गजनावास, मून्डसर, भाटेलाई पुरोहितान, जसनाथ नगर, तोलेसर पुरोहितान, तोलसर चारण, अजितनगर, बासनीमन्ना, बम्बोर इर्जियान एवं बावरली गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 95 महिला पशुपालकों सहित कुल 244 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वन्यजीव गणना

वन्य जीवों की जाति या उनके समुदाय की संख्या का आंकलन करना वन्यजीव गणना कहलाता है। साधारणतः जानवरों की संख्या का अनुमान लगाना काफी मुश्किल काम सिद्ध हुआ है। विभिन्न पद्धतियों द्वारा किसी क्षेत्र में वन्यजीवों की संख्या व उनके बढ़ते/घटते घनत्व के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। पकड़ना व पुनः पकड़ना, पूर्व निर्धारित रास्ते पर चलते हुए लाइन ट्रांसपेक्ट सैम्पलिंग आदि प्रत्यक्ष तरीकों द्वारा पशुओं की संख्या का आंकलन किया जा सकता है। घास खाने वाले जानवरों जैसे हाथियों की गणना प्रति इकाई क्षेत्र में मल के ढेर की संख्या का आंकलन करके व बाघों की संख्या उनके पंजों के निशान के आधार पर अप्रत्यक्ष रूप से की जा सकती है। कभी–कभी घूमते हुए बाघ ओर बाघिन की फोटो खींचकर, उनकी धारियों के पैटर्न से बाघों की पहचान कर उनकी गणना की जा सकती है। सबसे आसान तरीका है पानी के स्त्रोतों द्वारा गणना करना। ग्रीष्म ऋतु में पूरणमासी पर संरक्षित क्षेत्रों में पाए जाने वाले प्रत्येक पानी के स्त्रोत (जलाशय, नदी, तालाब आदि) पर लगातार 24 घंटे पर्यवेक्षक द्वारा निगरानी रखी जाती है। प्रत्येक जल स्त्रोत पर देखे गए जानवरों की संख्या को जोड़ा जाता है। यह माना जाता है कि हर पशु दिन में एक बार पानी पीने आता है और इस प्रकार उस क्षेत्र में विभिन्न पशुओं की संख्या में आए बदलाव को देखा जा सकता है। वन्यजीव अभयारण्य अधिनियम के अनुसार हर तीसरे साल दुर्लभ वन्यजीवों की गणना करवाने का प्रावधान है जिससे इन जीवों की संख्या में वृद्धि या गिरावट का अध्ययन कर इनके संरक्षण हेतु किए गए प्रयासों का मूल्यांकन किया जा सके।

डॉ. तरूणा भाटी, (मो.नं.9413602455)
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

जून माह में पशु प्रबंधन कैसे करें

इस वर्ष मई माह में वातावरण का तापमान काफी ज्यादा चल रहा है और जून में भी तापमान ज्यादा रहने की उम्मीद है। हालांकि बीच–बीच में कई स्थानों पर छुटपुट बरसात व ओलावृष्टि भी हुई है, लेकिन कुल मिलाकर गर्मी अपने चरम पर है, गर्मी के समय पशुओं को चारे, पानी की कमी का सामना करना पड़ता है। गर्मी में पशु उत्पादन पर विपरीत असर पड़ता है। दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में कमी व बोझा ढ़ोने वाले पशुओं की कार्य क्षमता में काफी कमी आती है। इसी प्रकार मुर्गियों में अण्डा उत्पादन में भारी गिरावट देखी जाती है। साथ ही ब्रायॅलर मुर्गियों की वजन बढ़ोतरी भी कम होती है। यदि इस तेज गर्मी में पशु–पक्षियों का प्रबंधन ठीक प्रकार नहीं किया जाता है तो उत्पादन में कमी के साथ ही उनके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर होता है। इस समय पानी की कमी से निर्जलीकरण की समस्या भी आम है। दुधारू पशुओं में चारे व लवण की कमी से पाईका व बोटूलिज्म होना सामान्य समस्या है। तेज लू से पशु तापघात के भी शिकार हो जाते है। तापघात व निर्जलीकरण की वजह से पशु व मुर्गियों में मृत्यु होने की संभावना रहती है। अतः पशुपालक व मुर्गीपालक भाईयों को अपने पशुओं व मुर्गियों को तेज गर्मी के कुप्रभाव से बचाने के लिए समुचित प्रबंध करने चाहिए।

1. पीने के लिए स्वच्छ एवं ठण्डे पानी का प्रबंध करें और दिन में 3–4 बार पानी उपलब्ध करायें।
2. पशुओं को छप्पर अथवा छायादार वृक्ष के नीचे बांधे व बाड़े में ठंडक के लिए पानी का छिड़काव करें।
3. भैंसों को दिन में एक बार अवश्य नहलाना चाहिए।
4. पशुओं को सीधे लू से बचाने के लिए खिड़कियों व दरवाजो पर ट्राट–पट्टी लगाएं जिनको पानी से गीला भी किया जाना चाहिए लेकिन पशुपालक यह अवश्य ध्यान रखें कि पशुघर में आर्द्रता ज्यादा न हो अन्यथा वे पशु–पक्षियों के लिए नुकसान दायक रहती है।
5. छोटे स्थान पर आवश्यकता से अधिक मुर्गियों को न रखें।
6. पशु–पक्षियों के बीमार होने पर तुरन्त पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

कुक्कुट आवास प्रबन्धन

आदिकाल से मानव जाति कुक्कुट काम में लेती रही है। पहले ये जंगल में रहती थी, पेडों पर घोंसले बना अण्डे देती थी और पेडों के बीज व वनस्पतियां खाकर गुजर करती थी। उस समय अण्डे भी कम देती थी और प्रीडेटरर्स से बच भी कम पाती थी। मानव ने उपयोगिता समझकर इन्हें पालना शुरू किया एवं उत्पादन में वृद्धि की। इसको सुरक्षा प्रदान कर एवं नस्ल में सुधार कर उत्पादन बढाया। आज का 300 अण्डे प्रतिवर्ष एवं ब्रायलर का 6 सप्ताह में 1 किलों के करीब वजन प्राप्त करना इसी सुधार का फल है। आवास आरामदायक, सुरक्षा करने वाला एवं कम खर्च से बनने वाला होना चाहिए। इसके लिए स्थान का चयन आवश्यक है।

- आवास बस्ती के बीच नहीं होना चाहिए। इससे मुर्गियों को स्वच्छ वायु नहीं मिल सकेगी।
- यह बस्ती से अधिक दूर भी नहीं होना चाहिए। अधिक दूर होने से आने–जाने में पैसे व समय अधिक व्यय होता है।
- आवास पक्की सडक से जुड़ा होना चाहिए। इससे मुर्गियों को दाना पहुंचाने एवं वहां से अण्डा लाने में आसानी होगी।
- आवास सडक पर भी नहीं होना चाहिए, जिससे मुर्गियों को शांत वातावरण मिल सकें एवं जाली काटकर चोरी से भी बचाया जा सकेगा।
- खेत में यदि बनाना हो तो अनुत्पादित जमीन पर बनाना चाहिए।
- ऐसे स्थान पर बनाना चाहिए जहां पर बस्ती का कचरा न पडता हो एवं पानी न भरा रहता हो। स्वच्छ वायु मिलेगी एवं मुर्गियों का मक्खी, मच्छर से बचाव भी हो सकेगा।
- बिजली, पानी की समुचित व्यवस्था होना अति आवश्यक है।

आवास का स्थान सुनिश्चित करने के बाद क्षेत्र की आवश्यकता पर ध्यान देना आवश्यक है। एक मुर्गी को कम से कम 2 फीट क्षेत्र की आवश्यकता रहती है। इससे कम में यदि मुर्गियां पाली जाएगी तो वे अण्डे कम देगी और देर से देगी एवं निश्चित वजन पर नहीं आ सकेगी। जितनी मुर्गियों का फार्म बनाना है, इस हिसाब से क्षेत्र लेते समय इनके दाने का कमरा, अण्डा रखने के भण्डार एवं नौकर आदि के रहने की व्यवस्था का क्षेत्र अलग से होना चाहिए। आगे मुर्गियों की संख्या बढाने का स्थान भी पहले सोच लेना चाहिए। आवास बनाते समय दिशा का भी ध्यान देना आवश्यक है। गहरी बिछावन पद्धति से मकान बनाते समय लंबाई तो चाहे जितनी रखी जा सकती है, परन्तु चौडाई 20 फीट से अधिक नही होनी चाहिए। इससे अंदर की सभी मुर्गियों को स्वच्छ वायु मिल सकती है। अधिक से अधिक चौड़ाई यदि बढानी पड़े तो यह 30 फीट की जा सकती है। इसकी लंबाई पूर्व, पश्चिम दिशा में होनी चाहिए। मुर्गी को प्रकाश तो आवश्यक है, परन्तु धूप व गर्मी नहीं सुहाती है। लंबाई पूर्व–पश्चिम में होने से सूर्योदय से सूर्यास्त तक धूप मुर्गियों के दड़बे में नहीं जाएगी।

आजकल भूमि की उपलब्धता कम होने के कारण दो पद्धतियां अपनाई जा रही है:

1. डीप लिटर सिस्टम।
2. केज सिस्टम।

डीप लिटर सिस्टम :गहरी बिछावन पद्धति – गहरी बिछावन पद्धति में पक्षी को एक सीमित दायरे में रखा जाता है। इनका दाना–पानी भी वहीं दिया जाता है। मुर्गी अण्डे भी वहीं देती है और फर्श पर 3 से 4 इंच मोटी लिटर बिछा दी जाती है। पहले प्रति पक्षी 3 वर्ग फीट का स्थान दिया जाता था, परन्तु अब 2 वर्ग फीट प्रति पक्षी स्थान रखा जाता है। साथ ही 1/2 वर्ग फीट प्रति पक्षी के हिसाब से ब्रूडर रूम बनाया जाता है। यदि एक हजार मुर्गियों के लिए मकान बनाना है तो 2000 वर्ग फीट दडबे के लिए 500 वर्ग फीट ब्रूडर के लिए स्थान रखा जाता है। खर्च कम करने के लिए कई मुर्गीपालक ब्रूडर का काम पैन से ही ले लेते हैं या स्टोर को ब्रूडर के काम में लिया जाता है। सीमित दायरा देने हेतु 3 फीट की एक दीवार बनाई जाती है। यह दीवार बनाने में ईंट, पत्थर के पतले लम्बे टुकडे काम में लिए जाते हैं। जहां पर जो वस्तु सस्ती सुलभ हो उसी का उपयोग किया जाता है। नींव पिलर्स की ही गहरी ली जाती है। इस दीवार पर 4 फीट की मुर्गी जाली लगाई जाती है। साइड के पिलर 7 फीट ऊंचाई के बनाए जाते हैं और बीच के पिलर 10 फीट ऊंचे बनाए जाते हैं। जिन स्थानों पर गर्मी कम पड़ती है, वहां पर 9 फीट ऊंचे पिलर बनाने से काम चल जाता है। इसके ऊंपर छत एस्बेस्टॉस सीमेंट या केलू की डाली जाती है। छत को दीवार से डेढ फीट आगे तक निकाला जाता है। इसे ओवर हैंग कहते है। यह पैन के अंदर धूप से रक्षा करता है एवं पानी की बौछारों से बचाता है। यदि छत का उपयोग करना है या 2 मंजिल का पैन बनाना हो तो साईड के पिलर भी ऊंचे बनाने पडते है। दोनों मंजिल एक साथ बनाई जा रही है तो नीचे की मंजिल 8 फीट ऊंची बना सकते हैं। इस पर छत पत्थर या आरसीसी की डाली जा सकती है। छत बनाते समय कुछ लोहे के कडे अंदर लटका दिए जाते हैं। साइड की 3 फीट की दीवार मुर्गियों को गर्म लू व ठण्डी हवाओं से रक्षा करती है। कई फार्मो में अण्डे देने का स्थान व नेस्ट साथ–साथ बना दिया जाता है। उस पर पानी की नाली बना देते है जो लिटर को गीला होने से बचाती है एवं नेस्ट बनाने से स्थान की भी बचत होती है। फर्श की तह पर एक वेंटिलेटर 1 फीट का बनाया जाता है जिसे सीमेंट की जाली और बारीक जाली से बंद किया जाता है। यह लिटर को सूखने में मदद करता है। पैन के बनाने में लकडी का उपयोग नहीं होना चाहिए। फर्श कच्चा या पक्का दोनों प्रकार का बनाया जाता है। पक्के फर्श में सीमेंट या पत्थर के स्लेक काम में लाए जाते हैं। इससे चूहों के बिल बनाने की परेशानी दूर हो जाती है। ये फर्श पानी कम सोखतें हैं, इसलिए लिटर का विशेष ध्यान रखना पडता है। यदि लिटर गीला रहेगा तो कडापन हो जाता है। अमोनिया बदबू अधिक आती है जो पास–पड़ोस को और मुर्गियों के लिए कष्टदायक होती है। गीले लिटर में कई बैक्टिरियां पैदा हो जाते हैं जो मुर्गियों को बीमार कर देते हैं। लिटर इस प्रकार के सामान का लिया जाता है जो उस क्षेत्र में सस्ता हो। गेहूं का खाखला, चावल का छिलका, मुंगफली का छिलका या बुरादा। बाजरे का खाखला काम में नही लिया जाता है, क्योंकि यह बहुत जल्दी पाउडर हो जाता है एवं नमी भी नहीं सोखता है। इसे प्रति सप्ताह उलट–पुलट करना आवश्यक है। फर्श कच्चा भी रखा जा सकता है, जिसमें नीचे कंकरी, कुटी हो, जिससें चूहे बिल न बना सकें। उसके ऊपर मूरड हो और लीप दिया जाए। फिर लिटर बिछाया जाए। कच्चा फर्श लिटर की नमी ले लेता है एवं उसे सूखा रहने में मदद करता है।

केज सिस्टम : पिंजरा पद्धति– इस पद्धति में मुर्गियों को बिल्कुल ही सीमित दायरे में ऐसे पिंजरों में पाला जा सकता है जो 2 व 3 मंजिल के हो सकते हैं। इसमें मकान की छत काफी ऊंची रखी जाती है और पिंजरे जमीन से कम–कम 4 फीट ऊपर रहते है। इसमें प्रति पक्षी 5–7 वर्ग फीट तक स्थान की आवश्यकता रहती है। दाने व पानी के लिए अलग–अलग चैनल होती है जो पिंजरे के फिक्स की हुई होती है। अण्डा भी लुढक कर सामने आ जाता है। इस पद्धति में श्रम की बचत होती है। एक व्यक्ति 3500 से 4000 मुर्गियां संभाल सकता है। जबकि गहरी बिछावन पद्धति में 1000 मुर्गियां पाल सकता है। इसमें स्थान कम चाहिए, रोग से बचाव होता है, दवाईयों पर व्यय कम आता है। कम दाने की आवश्यकता पड़ती है। मुर्गियों की निगरानी में सुविधा रहती है। इससें नुकसान भी है, जैसे केक अण्डे अधिक आ सकते हैं। मुर्गियों को घूमने का स्थान न होने से पैरों की बीमारी हो जाती है। एक–दूसरे को नोंचना, पैकिंग व कैनावोलिज्म की बीमारी रहती है। गर्मी के दिनों में पक्षी अधिक परेशान रहते है। पैन में पंखे लगाने व कूलर लगाना आवश्यक हो जाता है। इसमें प्रारंभिक व्यय काफी आता है। अधिक मुर्गियां पालने के लिए यह डिप लिटर सिस्टम से सस्ता पड़ता है।

डॉ सूदीप सोलंकी, (मो.नं. 9950854959)
वेटरनरी कॉलेज, नवानिया (उदयपुर)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–जून, 2019

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका एवं मुहंपका रोग	गाय, भैंस, बकरी,	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, बांसवाडा
गलघोंटू	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, राजसमन्द, पाली, जैसलमेर, बीकानेर, सीकर, हनुमानगढ़, जयपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक, बून्दी
न्यूमोनिक– पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जालौर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सिरोही, बीकानेर
ठप्पा रोग	भैंस	जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ , भरतपुर, कोटा, बूंदी
बॉटूलिस्म	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, श्रीगंगानगर
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बांसवाडा, हनुमानगढ़, बून्दी
पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	श्रीडूंगरगढ़, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, बून्दी , धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, भरतपुर, सीकर
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, जैसलमेर
तीन दिन का बुखार	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर
ताप घात (Heatstroke) व निर्जलीकरण (Dehydration)	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, अपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, राजुवास, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी | गौपालन से रोहिताश कुमार की आय बढ़ी

कृषि के साथ–साथ पशुपालन राजस्थान के किसानों के लिए आय का प्रमुख स्त्रोत है। आज के युग में बेरोजगारी की विकट समस्या के चलते रोहिताश कुमार पुत्र श्री मदनलाल गांव 1 SKM V.P.O.1S.K.M. तहसील घड़साना जिला श्रीगंगानगर के निवासी ने गौपालन को अपनी आय का स्त्रोत बना कर सफलता प्राप्त की। रोहिताश कुमार अपने पिता के साथ पारंपरिक खेती कर रहे थे। लेकिन पारंपरिक खेती करने से रोहिताश कुमार को आमदनी अच्छी नहीं हो रही थी। कम आमदनी के चलते वे सूरतगढ़ में पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने उन्हें खेती के साथ–साथ पशुपालन करने की सलाह दी। उन्होंने पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र सूरतगढ़ से पशुपालन से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्राप्त कर पशुपालन व्यवसाय को वैज्ञानिक तरीके से करने की सोची। रोहिताश कुमार ने शुरूआत में डेयरी फार्म का काम 2 गाय से शुरू किया आज उनके पास 10 गायें हैं जो कि प्रतिदन 1.50 क्विंटल दूध देती है जिससे उनको प्रत्येक महीने 55000 रू. की आमदनी होती है। रोहिताश कुमार के पास 8 बीघा जमीन है जिसमें जैविक तरीके से हरा चारे का उत्पादन करते हैं। और साथ बॉयो गैस प्लांट स्थापित किया है। बॉयो गैस का ईंधन के रूप में प्रयोग भी करते हैं तथा बॉयो गैस प्लांट से बनी खाद के द्वारा अपने खेत में जैविक हरे चारे का उत्पादन करते हैं जिससे उन्हें बहुत अच्छा लाभ मिला है, गायों का दूध भी बढ़ा हैं साथ में दाने की भी बचत होती है। वह अपने इस व्यापार से बहुत खुश हैं तथा वह इस कार्य के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों को धन्यवाद देते हैं। **(सम्पर्क–रोहिताश कुमार (मो.नं.9549426952)**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

सूखे चारे की पौष्टिकता बढ़ाकर उपयोग में लेना अधिक लाभकारी है

प्रिय, कृषक एवं पशुपालक बंधुओ!

गर्मी के मौसम में हरे चारे की उपलब्धता में कमी हो जाती है। ऐसे समय में सूखे चारे में पौष्टिकता बढ़ाने की तकनीक का उपयोग जरूरी है। सूखे चारे में सेल्यूलोज व हेमी सेल्यूलोज की अधिकता होती है तथा दूसरा अधिकतर भाग अपौष्टिक लिग्निन से जुड़ा होता है जिससे चारे में उपलब्ध प्रोटीन व ऊर्जा नहीं मिल पाती है। अकाल के समय कम लागत में यूरिया, गुड़ व खनिज लवण मिश्रित चारा खिलाने से पशु को उसकी जरूरत का प्रोटीन मिल जाता है। इस तकनीक से तैयार पशु चारे में उपलब्ध ऊर्जा से 10–15 प्रतिशत तक अधिक ऊर्जा प्राप्त होती है। पशु भी इसे चाव से खाते हैं और उन्हें अधिक पौषक तत्व प्राप्त होते हैं। इस विधि में 100 किलोग्राम सूखा चारा साफ जगह पर अच्छी तरह फैला लें। इसके बाद एक बाल्टी में 15 से 20 लीटर पानी, 2 किलोग्राम गुड़, 1 किलोग्राम यूरिया, 1 किलोग्राम खनिज लवण व 1 किलो नमक का घोल तैयार कर लें। बाल्टी में बने घोल को फव्वारे की मदद से बिछाए हुए सूखे चारे पर छिड़काव कर दें। छिड़काव वाले सूखे चारे को अच्छी तरह पलट कर मिश्रित कर लेवें जिससे सूखा चारा एक समान हो जाए। उपचारित चारे को हवा में कुछ देर फैलाकर फिर पशु को खिलाएं। यह उपचारित चारा तीन माह तक सुरक्षित रहता है। इस विधि में ध्यान रखने योग्य है कि यूरिया घोल में पूरी तरह घुल जाना चाहिए और घोल का चारे पर छिड़काव भी अच्छी तरह किया जाना चाहिए। छः माह से छोटे पशु को ऐसा उपचारित चारा नहीं खिलाना है। इस विधि में यूरिया, गुड़ व खनिज लवण मिश्रित चारे से उसकी पौष्टिकता में वृद्धि होती है। इसके अलावा एक अन्य विधि में यूरिया से उपचारित करके सूखे चारे की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। इसमें 100 किलोग्राम सूखा चारा साफ जगह पर फैला दें। 1 से 1.5 किलोग्राम यूरिया लगभग 10 लीटर पानी में घोल बना लें। झारे की सहायता से इस घोल को सूखे चारे पर छिड़क कर उपचारित चारा अच्छी तरह से पलट कर मिला लें। इसे सुखाकर पशु को खिलाएं। इस उपचारित चारे के साथ 50 ग्राम खनिज लवण व 30 ग्राम नमक भी पशु को खिलाएं।

–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

मुस्कान !

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224